टिप्पणी

22

भारतीय अर्थव्यवस्था - विश्व के संदर्भ में

आप जानते हैं कि भारत विश्व के अनेक देशों में से एक है। देश एक दूसरे के साथ सम्पर्क स्थापित करते हैं और बहुत से अपने हित वाले क्षेत्रों में सम्बन्ध रखते हैं। एक देश के नागरिक टूरिस्ट के रूप में, नौकरी खोजने के लिए, व्यापार करने के लिए, अध्ययन करने के लिए, धर्मार्थ कार्यों के लिए और कुछ सरकारी कार्यों आदि के लिए दूसरे देशों की यात्रा करते हैं। इस अध्याय में मुख्य केन्द्र, भारत और शेष विश्व में आर्थिक सम्बन्ध हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप समझ सकेंगे:

- देशों में आर्थिक सम्बन्ध का अर्थ;
- व्यापार का महत्व;
- भारत द्वारा वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात और आयात;
- वैश्वीकरण का अर्थ;
- अंत में, हम दो बहुत ही महत्वपूर्ण अर्थव्यवस्थाओं, अमेरिका और चीन पर एक विहंगम दृष्टि डालेंगे जिससे कि आपको विश्व में भारत की तुलनात्मक स्थिति के विषय में कुछ ज्ञान हो सके।

22.1 देशों के बीच में आर्थिक सम्बन्ध का अर्थ

यदि आपको मुद्रा की आवश्यकता है तो आप इसे किसी मित्र अथवा बैंक से उधार ले सकते हैं। यदि आप एक पुस्तक खरीदना चाहते हैं तो आप अपनी स्थानीय पुस्तक की दुकान को मुद्रा का भुगतान करके, प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप वस्तुओं जैसे स्टेशनरी या कपड़े या जूते आदि के विक्रेता हैं तो आप उन्हें उन उपभोक्ताओं को बेचते हैं जो आपको कीमत का

भुगतान करते हैं। यदि आप किसी वस्तु का उत्पादन करना चाहते हैं तो आप कुछ मुद्रा का निवेश कर सकते हैं और एक फैक्ट्री आरम्भ कर सकते हैं और उन लोगों को रोजगार दे सकते हैं जो आपको अपना श्रम दे सकते हैं। ये सब आप के देश के अन्दर आर्थिक गतिविधियों के उदाहरण हैं, जिनमें अपने देश के नागरिक भाग लेते हैं। किन्तु जब ऐसी गतिविधियां दो या अधिक देशों के नागरिकों के मध्य होती हैं तो हम इसे इन **देशों के मध्य आर्थिक सम्बन्ध** कहते हैं। भारत का उदाहरण लो। क्योंकि हम भारत के नागरिक हैं, हम भारत को अपना घरेलू देश कहते हैं और 'शेष विश्व' में अन्य सभी देश शामिल हैं। इसलिये जब भारत और शेष विश्व में आर्थिक संबंध है तो हमारा तात्पर्य है कि भारत के नागरिक वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय (दोनों खरीदना और बेचना) विदेशी नागरिकों के साथ कर रहे हैं या विदेशों में नौकरी या व्यापार आदि करने के लिये जा रहे हैं। इसी प्रकार, विदेशी नागरिक नौकरी करने अथवा व्यवसाय के लिए भारत आते हैं। इसके अनुसार आर्थिक सम्बन्धों के कुछ उदाहरण निम्न प्रकार से दिये जा सकते हैं।

1. घरेलू नागरिकों द्वारा विदेशी नागरिकों को विदेश में वस्तुएं और सेवाएं बेचना। इसे निर्यात कहते हैं।
2. घरेलू नागरिकों द्वारा विदेशों से वस्तुएं और सेवाएं खरीदना। इसे आयात कहते हैं।
3. किसी को विदेशों में उपहार भेजना और इसी प्रकार विदेशों से उपहार प्राप्त करना।
4. विदेशों को मुद्रा भेजना और विदेशों से मुद्रा प्राप्त करना।
5. पर्यटकों, व्यवसायिक व्यक्तियों और सरकारी प्रतिनिधि मंडलों द्वारा विदेशों की यात्रा करना।

जब एक देश के अन्य देशों के साथ आर्थिक संबंध होते हैं तो वह खुली अर्थव्यवस्था कहलाती है।

22.2 व्यापार का महत्व

ऊपर दिये गये (i) और (ii) उदाहरण व्यापार के भाग हैं। लोग देश के अन्दर बाजार के माध्यम से वस्तुएं और सेवाएं खरीदते और बेचते हैं। जब वही क्रिया विभिन्न देशों के नागरिकों के बीच होती है तो हम उसे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार कहते हैं।

निर्यात और आयात, वस्तुओं और सेवाओं का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार है।

व्यापार की गतिविधियां पूर्णरूप से अर्थव्यवस्था का भाग हैं। किसी अर्थव्यवस्था में व्यापार के बिना जीवन को देख पाना कठिन है। वस्तुएं, एक स्थान से दूसरे स्थान को, रेलगाड़ियों, ट्रकों, आदि से देश के अंदर लगातार भेजी जाती है। इसी प्रकार, हवाई जहाज और समुद्री जहाज का प्रयोग बहुत सी वस्तुओं को विभिन्न देशों में भेजने के लिए किया जाता है।

इसका उद्देश्य, वस्तुओं अथवा सेवाओं को उन लोगों को उपलब्ध कराने से है जो उनका भुगतान करना चाहते हैं, इससे कोई सरोकार नहीं कि क्रेता कहां रहता है। इसका तात्पर्य यह है कि

टिप्पणी

वस्तुओं और सेवाओं का वितरण केवल व्यापार द्वारा ही संभव है। यही कारण है कि व्यापार इतना महत्वपूर्ण है। हम व्यापार के नीचे दिये गये बहुत से अन्य लाभों पर भी विचार कर सकते हैं :

1. व्यापार के द्वारा लोग विभिन्न प्रकार की वस्तुएं और सेवाएं प्राप्त कर सकते हैं। गर्मियों में आप हमेशा ठंढ़े पेय पसंद करोगे। बाजार में उपलब्ध कुछ ठंडे पेय, कोका कोला, पेप्सी कोला आदि हैं। क्या आप जानते हैं, भारत में कोका कोला कहां से आया। यह अमेरिका में बनाया गया जो भारत से बहुत दूर है। अब, वास्तव में, कोका कोला के संयंत्र भारत में स्थित हैं किन्तु अब भी यह एक विदेशी कम्पनी है। इसी प्रकार, भारत के अचार बाहर बहुत से देशों में भारतीय व्यापारियों द्वारा बेचे जाते हैं। अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिये भारतीय वस्तुओं का उपभोग विदेशियों द्वारा व विदेशी वस्तुओं का उपभोग भारतीयों द्वारा किये जाने के बहुत से उदाहरण हैं।

2. व्यापार, नई वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन को प्रोत्साहन देता है। व्यापार के द्वारा विक्रेता और क्रेता एक दूसरे के साथ सम्पर्क स्थापित करते हैं। इसलिए विक्रेता, क्रेताओं की पसंद और वरीयता को जानते हैं और उसी के अनुसार उपभोग के लिये वस्तुएं और सेवाएं उपलब्ध कराते हैं।

3. विभिन्न देशों के लोग व्यापार के माध्यम से आपस में मिलते हैं और संपर्क स्थापित करते हैं। तदनुसार, एक देश के लोग दूसरे देश की सभ्यता, रीति-रिवाज, भाषा आदि जान सकते हैं।

4. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण वस्तुओं का उत्पादन अधिक कुशलता से करना संभव हो जाता है क्योंकि इससे विशिष्टीकरण होता है। इसका तात्पर्य है कि वस्तुओं का उत्पादन कम लागत पर किया जा सकता है जिससे लोग उन्हें कम कीमत पर प्राप्त कर सकेंगे। कैसे? एक वस्तु का उत्पादन एक से अधिक देश में हो सकता है किन्तु एक देश में उसका उत्पादन करने के लिए अच्छा कच्चा माल और प्रौद्योगिकी हो सकती है। भारत का उदाहरण लीजिये, भारत में मसाले और कपास आदि की खेती अनुकूल जलवायु और मिट्टी की दशा के कारण आसानी से हो जाती है। अच्छी प्रथा, परम्परा और संस्कृति के कारण भारत का हस्तकला उद्योग विश्व विख्यात है। इसलिये, इनका उत्पादन भारत में आसानी से कम लागत पर होता है। तदनुसार, भारत इन वस्तुओं के उत्पादन में विशिष्टीकरण प्राप्त कर सकता है। इसलिये दूसरे देश ये वस्तुएं भारत से सस्ती कीमत पर खरीद सकते हैं। इसी प्रकार दक्षिणी अफ्रिका में हीरे आसानी से मिल जाते हैं क्योंकि वहां उनकी खानें होती हैं। आपको ऐसे बहुत से दूसरे भी उदारहण मिल सकते हैं। मुख्य बात यह है कि यदि कोई देश किसी वस्तु का उत्पादन अच्छी गुणवत्ता और सस्ती लागत पर कर सकता है तो उसे उस वस्तु के उत्पादन में विशिष्टीकरण प्राप्त हो जाता है और उसे उस वस्तु का अन्य देशों को निर्यात करने से लाभ प्राप्त होता है।

पाठगत प्रश्न 22.1

1. विदेशी व्यापार का एक लाभ बताओ।
2. निर्यात से क्या अभिप्राय है?
3. आयात की परिभाषा दीजिए।

22.3 भारत द्वारा निर्यात और आयात

भारत के संसार के बहुत से देशों के साथ आर्थिक सम्बन्ध हैं। परिणाम स्वरूप, भारत बहुत सी वस्तुओं का निर्यात विदेशों को करता है। विदेशों से बहुत सी वस्तुओं का आयात करता है। वे देश जिनके साथ भारत निर्यात और आयात की गतिविधियों में संलग्न हैं वे भारत के व्यापार के साझीदार कहलाते हैं।

(अ) भारत के निर्यात

मुख्य मदें जिनका भारत विभिन्न देशों को निर्यात करता है, वे इन्जीनियरिंग का समान, हस्तशिल्प, रसायन और संबद्ध उत्पाद, सिले हुए कपड़े, सूत, लोह-अयस्क, चमड़ा, मछलियाँ, चावल, फल और सब्जियां आदि हैं। कुछ देश जिनको भारत निर्यात करता है, फ्रांस, जर्मनी, यू.के., यू.एस.ए., ईरान, यू.ए.ई., चीन, हांगकांग, सिंगापुर, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के कुछ देश हैं।

(ब) भारत के आयात

पेट्रोलियम, स्नेहक, मुख्य मदें हैं, जिनका भारत आयात तेल और पेट्रोलियम निर्यात करने वाले देशों (OPEC) जैसे ईरान, यू.ए.ई. और सऊदी अरब आदि से करता है। भारत अलोह धातुओं, पूंजीगत वस्तुओं और उर्वरकों का भी आयात करता है। पूंजीगत वस्तुओं में बिजली और बिना बिजली से चलने वाली मशीनें और परिवहन उपस्कर शामिल हैं। भारत के आयात अधिकतर उन्हीं देशों से आते हैं जिनको यह वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात करता है।

पाठगत प्रश्न 22.2

1. भारत के निर्यात के दो मुख्य मदों के नाम बताओ।
2. भारत के आयात के दो मदों के नाम बताओ।
3. भारत के दो मुख्य व्यापार के साझीदारों के नाम बताओ।

22.4 वैश्वीकरण का अर्थ

आजकल वैश्वीकरण शब्द का सामान्य रूप से प्रयोग किया जाता है। कारण स्पष्ट है। आज दूरदर्शन, इन्टरनेट तथा मोबाइल फोन आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। आज दूर दराज देशों

में लोग मोबाइल फोन के माध्यम से बात कर सकते हैं तथा सम्पर्क में रह सकते हैं। आज, आप भारत और वेस्टइन्डीज के क्रिकेट मैच का सीधा प्रसारण दूरदर्शन पर देख सकते हैं।

आप यू.एस.ए. मे अपने मित्र से या यूरोप में मोबाइल फोन से बात कर सकते हो। यदि आप विस्तार में कुछ कहना चाहते हो तो आपको पत्र भेजने की आवश्यकता नहीं है। भारत से यू.एस.ए. में एक पत्र प्राप्त करने में इसे 7 दिन लग जाते हैं। किन्तु इन्टरनेट के माध्यम से आप ई-मेल भेज सकते हो जो आपके मित्र के पास कुछ ही सेकण्ड में पहुंच जाता है।

आप जर्मनी या जापान में उत्पादित एक नई वस्तु मंगवाने के लिए इन्टरनेट के माध्यम से आदेश कर सकते हैं ओर यह आपके पास भारत में पहुंच जायेगी। इन प्रगतियों के कारण हम सोचते हैं कि संसार छोटा हो गया है और एक गांव में रहने वाले बहुत से परिवारों की तरह दिखाई देता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यह विकास कुछ दिनों में नहीं हुआ है। इसकी प्रक्रिया बहुत लम्बी अवधि से चल रही है। प्राचीन काल में व्यक्ति और व्यक्तियों के समूह वस्तु और सेवाओं के व्यापार के लिये विभिन्न देशों की यात्रा समुद्री मार्ग से करते थे। हवाई जहाज और समुद्री जहाज के आविष्कार से यात्रा करना और वस्तुएं भेजना आसान हो गया है। अब विभिन्न देशों की सरकारों ने आपस में संपर्क स्थापित करना प्रारम्भ कर दिया है जिससे आने वाली बाधाओं को कम से कम किया जा सके और सभी राष्ट्रों के नागरिक वस्तुओं का विनिमय बिना किसी समस्या के कर सकें। तकनीकी और वैज्ञानिक उन्नति के कारण परिवहन और संचार के साधनों ने, जैसा कि आप आज देखते हो, विभिन्न देशों के नागरिकों में संपर्क की प्रक्रिया को अब आसान बना दिया है। इसलिए अब हम विश्व में अलग नहीं हैं यद्यपि हम विभिन्न देशों के अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग रह रहे हैं। बल्कि व्यापार, परिवहन और संचार की व्यवस्था से लोग एक दूसरे के पास आ गए हैं। लोग घरेलू और विदेशी दोनों प्रकार की वस्तुओं का उपभोग कर सकते हैं, नौकरी करने के लिए विदेशों में जा सकते हैं, विदेशी नागरिकों से विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं, विभिन्न देशों को वस्तुओं और सेवाओं का निर्यात कर सकते हैं आदि।

विश्व के विभिन्न देश एक दूसरे के पास आते हुए प्रतीत होते हैं। यह प्रक्रिया साधारण भाषा में वैश्वीकरण कहलाती है।

22.5 भारत, चीन और यू.एस.ए. में आर्थिक विकास की तुलना

यू.एस.ए. संसार के सबसे अधिक विकसित देशों में से एक है। भारत और यू.एस.ए. की अर्थव्यवस्था में समान बात यह है कि दोनों संसार के सबसे बड़े प्रजातंत्र हैं अर्थात दोनों में शासन, जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा किया जाता है। चीन और भारत दोनों में समान बात यह है कि दोनों एशिया महाद्वीप के भाग हैं और पड़ोसी हैं। कुछ समय पहले भारत और चीन, में आर्थिक विकास का स्तर लगभग एक समान था। दोनों विकासशील राष्ट्र थे। किन्तु पिछले कुछ वर्षों में चीन की अर्थव्यवस्था का विकास बहुत तेजी से होता रहा है। इसलिए इन अर्थव्यवस्थाओं की तुलना करना सार्थक है। आपने भारतीय अर्थव्यवस्था के विषय में पहले

टिप्पणी

ही, पहले तीन पाठों में अध्ययन किया है। यहां यू.एस.ए. और चीन की अर्थव्यवस्था के विषय में क्रमशः विहंगम दृष्टि डालते हैं।

22.5.1 यू.एस.ए. की अर्थव्यवस्था का एक संक्षिप्त लेखा जोखा

यू.एस.ए. की अर्थव्यवस्था की एक बहुत महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि निजी क्षेत्र वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में एक प्रमुख भूमिका अदा करता है। सरकार व्यवसाय के कार्यों में अधिक हस्तक्षेप नहीं करती। यू.एस.ए. में 3 करोड़ छोटे व्यवसाय हैं। संसार की 500 सबसे बड़ी कम्पनियों में, 139 यू.एस.ए. में हैं। लगभग सबसे अधिक धनी लोगें में से 40 प्रतिशत यू.एस.ए. में रहते हैं। अमेरिका के व्यवसायी और निगमों का सारे विश्व में प्रभाव और उनकी उपस्थिति पाई जाती है। बहुराष्ट्रीय निगम, जैसे फोर्ड मोटर्स, जनरल इलेक्ट्रिक, कोका कोला, वाल मार्ट, आदि यू.एस.ए. से आये हैं।

यू.एस.ए. की कृषि भी बहुत उन्नत है। यह खाद्यान्नों जैसे गेहूँ, अनाज, फल और सब्जियों के सबसे बड़े निर्यातकों में से एक है।

विनिर्माण में यू.एस.ए. का विनिर्माण उत्पादन, चीन, भारत और ब्राजील के संयुक्त उत्पादन से अधिक था। केवल, हाल ही में अर्थात 2010 में ऐसा कहा जाता है कि चीन यू.एस.ए. से आगे निकल गया है। पेट्रोलियम, स्टील, मोटर गाड़ियां, निर्माण में प्रयोग की जाने वाली मशीनें और कृषि में प्रयोग की जाने वाली मशीनें अमरीका के कुछ प्रमुख विनिर्माण उद्योग हैं।

शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं यू.एस.ए. में उच्च गुणवत्ता वाली हैं। भारत के 15 प्रतिशत के विपरीत, यू.एस.ए. में 85 प्रतिशत बच्चे पब्लिक स्कूलों में प्रवेश करते हैं। यू.एस.ए. वस्तुओं और सेवाओं के विश्व में तीन सबसे बड़े निर्यातकों में से एक है, और शेष विश्व से, सबसे बड़ा आयात करने वाला देश है। प्रत्येक व्यक्ति, डॉलर कहलाने वाली, उसकी करेन्सी को जानता है जो कि एक अन्तर्राष्ट्रीय करेन्सी है, क्योंकि यह लगभग हर जगह प्रचलन में है तथा विश्व व्यापार में यू.एस.ए. का आधिपत्य है।

इसकी अमीरी के बावजूद यू.एस.ए. में भी गरीबी और बेरोजगारी पाई जाती है। 2008 में इसकी जनसंख्या के लगभग 16 प्रतिशत भाग को अच्छा भोजन नहीं मिलता था। 2010 में इसकी बेरोजगारी की दर 9.9 प्रतिशत थी।

22.5.2 चीन की अर्थव्यवस्था

यह कहा जाता है कि चीन की अर्थव्यवस्था अब संसार में यू.एस.ए. के पश्चात दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। 1980 तक चीन अपनी आर्थिक शक्ति के विषय में बहुत महत्वपूर्ण नहीं था। इसकी स्थिति भारत के समान ही थी। किन्तु 1980 के पश्चात चीन की अर्थव्यवस्था, उसके द्वारा अपनाये गये आर्थिक सुधारों के कारण, बहुत तेजी से बढ़ी। आपको यह ज्ञान होना चाहिए कि भारत और यू.एस.ए. के विपरीत चीन में प्रजातंत्र या जनता का राज नहीं

है। चीन में एक पार्टी राज करती है और लोगों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं है। किन्तु, चीन की सरकार ने धीरे-धीरे निजी क्षेत्र को व्यवसाय स्थापित करने और वस्तुओं और सेवाओं का बड़ी मात्रा में उत्पादन करने की स्वीकृति दे दी है। इसके परिणामस्वरूप, चीन, विभिन्न देशों को अधिक मात्रा में निर्यात कर सका और बहुत अधिक मात्रा में विदेशी मुद्रा अर्जित कर सका।

भारत के समान चीन ने भी पंचवर्षीय योजना की युक्ति को अपनाया है। इसकी बारहवीं पंचवर्षीय योजना अभी हाल ही में प्रारंभ हुई है जिसकी अवधि 2011-2015 है। चीन की प्रथम योजना की अवधि 1953-57 थी। नियोजन और आर्थिक सुधारों को कठोरता से लागू करने के कारण चीन तेजी से आर्थिक विकास कर रहा है। अब, चीन की राष्ट्रीय आय और प्रतिव्यक्ति आय भारत की अपेक्षा तीव्र गति से बढ़ रही हैं। 2010 की प्रथम आधी अवधि में चीन का विश्व के कुल निर्यातों में 10 प्रतिशत भाग था और इसकी तुलना में भारत का भाग केवल 1.4 प्रतिशत था। जनसंख्या पर नियंत्रण के क्षेत्र में चीन का भारत से बेहतर प्रदर्शन रहा है। यह कहा जाता है कि भारत निकट भविष्य में जनसंख्या में चीन से आगे निकल जायेगा। अपने बेहतर आर्थिक पर्यावरण के कारण, चीन, विदेशों से, भारत की अपेक्षा अपने औद्योगिक और सेवाओं के विकास के लिए, अधिक मुद्रा आकर्षित कर रहा है। आज चीन का रहन-सहन का स्तर इतना अधिक सुधर गया है कि इसका निर्धनता अनुपात 1981 में 51 प्रतिशत से गिर कर 2005 में 2.5 प्रतिशत रह गया। जबकि भारत में उस समय 27.5 प्रतिशत लोग निर्धन थे।

पाठगत प्रश्न 22.3

1. भारत और चीन की एक समान आर्थिक विशेषता लिखो।
2. भारत, चीन और यू.एस.ए. की गरीबी के सम्बन्ध में तुलना करो।

आपने क्या सीखा

- आर्थिक सम्बन्ध का अर्थ और अन्य देशों से व्यापार के लाभ।
- भारत किन वस्तुओं का निर्यात और आयात करता है?
- आरंभिक स्तर पर वैश्वीकरण का अर्थ।
- यू.एस.ए. और चीन की अर्थव्यवस्थाओं की स्थिति की क्रमशः जानकारी जिससे आप उनकी तुलना भारत से कर सको जो पूर्व के पाठों में दी गई है।

पाठान्त प्रश्न

1. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लाभों की व्याख्या करो।
2. भारत के व्यापार के साझीदारों के और कुछ वस्तुओं जिनका यह व्यापार करता है, उदाहरण दो।
3. यू.एस.ए.की अर्थव्यवस्था पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखो।
4. चीन की अर्थव्यवस्था पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखो।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

पाठगत प्रश्न 22.1

1. विदेशी व्यापार से विशिष्टीकरण और वस्तुओं व सेवाओं का कुशलता से उत्पादन होता है।
2. शेष विश्व को वस्तुएं और सेवाएं बेचना निर्यात कहलाता है।
3. शेष विश्व से वस्तुएं और सेवाएं खरीदना आयात कहलाता है।

पाठगत प्रश्न 22.2

1. इंजीनियरिंग का सामान, हस्तशिल्प
2. पेट्रोलियम, बिजली की मशीन
3. यू.एस.ए., यू.ए.ई.

पाठगत प्रश्न 22.3

1. पंचवर्षीय नियोजन
2. 2005 में भारत की गरीबी दर 27.5 प्रतिशत थी जबकि चीन की केवल 2.5 प्रतिशत थी। यू.एस.ए. में इसकी जनसंख्या के लगभग 16 प्रतिशत लोगों को 2008 में अच्छा भोजन प्राप्त नहीं होता था।

मॉड्यूल 8 : समकालिक आर्थिक समस्याएं

23. पर्यावरण तथा धारणीय विकास
24. उपभोक्ता जागरूकता